DADABHAI NAOROJI

Dadabhai Naoroji, known as the Grand Old Man of India was one of the guiding lights in the late nineteenth century who played a cardinal role in shaping India's destiny. He had the distinction of becoming a Liberal Party Member of Parliament (MP) in the United Kingdom House of Commons between 1892 and 1895, the first Asian to be a British MP. Naoroji is also credited with the founding of the Indian National Congress, along with A. O. Hume and Dinshaw Edulji Wacha. His book "Poverty and Un-British Rule in India" gave a brilliant account of India's economic exploitation under the colonial rule.

Dadabahai Naoroji was born on September 4, 1825 in Mumbai in a Parsi family, and was educated at the Elphinstone Institute School. He was patronised by the Maharaja of Baroda, Sayajirao Gaekwad III, and started his public life as the Dewan (Minister) to the Maharaja in 1874. As an Athornan (ordained priest), Naoroji founded the Rahnumae Mazdayasne Sabha (Guides on the Mazdayasne Path) on August 01, 1851 to restore the Zoroastrian religion to its original purity and simplicity. In 1854, he also founded a Gujarati fortnightly publication, the Rast Goftar (or The Truth Teller), to clarify Zoroastrian concepts and promote Parsi social reforms. In 1855, he was appointed Professor of Mathematics and Natural Philosophy at the Elphinstone College in Bombay becoming the first Indian to hold such an academic position. He travelled to London in 1855 to become a partner in Cama & Co, opening a Liverpool location for the first Indian company to be established in Britain, but within three years, he resigned on ethical grounds. In 1859, he established his own cotton trading company, Dadabhai Naoroji & Co. Later, he became professor of Gujarati at University College London.

In 1865, Dadabhai Naoroji directed the launch of London Indian Society, the purpose of which was to discuss Indian political, social and literary subjects. In 1861, Naoroji, alongwith Muncherjee Hormusji Cama, founded the zoroastrian Trust Funds of Europe. In 1867 Naoroji also helped establish the East India Association, one of the predecessor organisations of the Indian National Congress with the aim of putting across the Indian point of view before the British public. The Association was instrumental in countering the divisive propaganda by some opinionated groups. This Association soon won the support of eminent Englishmen and was able to exercise considerable influence in the British Parliament. In 1874, he became Prime Minister of Baroda and was a member of the Legislative Council of Mumbai (1885–88). He was also a member of the Indian National Association founded by Sir Surendranath Banerjee from Calcutta a few years before the founding of the Indian National Congress in Bombay. The two groups later merged into the Indian National Congress, and Naoroji was elected President of the Congress in 1886.

Naoroji moved to Britain once again and continued his political involvement. Elected for the Liberal Party in Finsbury Central at the 1892 general election, he was the first British Indian MP. In 1901, he published his book, "Poverty and un-British Rule in India". In 1906, Naoroji was again elected president of the Indian National Congress. Naoroji was a staunch moderate within the Congress, during the phase when opinion in the party was split between the moderates and extremists. Naoroji was a mentor to Bal Gangadhar Tilak, Gopal Krishna Gokhale and Mohandas Karamchand Gandhi. He was married to Gulbai at the age of eleven. He died in Bombay on 30 June 1917, at the age of 91. In 2014, Deputy Prime Minister Nick Clegg inaugurated the Dadabhai Naoroji Awards for services to UK-India relations.

Dadabhai Naoroji's work focused on highlighting the drain of wealth from India into England during colonial rule. One of the reasons that the Drain theory is attributed to Naoroji is his decision to estimate the net national profit of India, and by extension, the effect that colonisation has on the country. In Naoroji's book he estimated a 200–300 million pounds loss of India's revenue to Britain that is not returned.

He was regarded as one of the most important Indians during the independence movement. Mahatma Gandhi wrote to Naoroji in a letter of 1894 that "The Indians look up to you as children to the father. Such is really the feeling here."

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Dadabhai Naoroji. The stamp also depicts Udvada Atash Behram Fire Temple and Elphinstone College. The Fire temple in Udvada is one of the eight fire temples (holy place of worship) of the Zoroastrian religion in the country and the oldest fire temples in India, dating back to the 8th century, and represents the historical cultural and religious links with ancient Persia. This temple also symbolizes the contribution of Dadabhai Naoroji in spreading the message of Zoroastrian concepts and promoting social reforms in the Parsi Community. The temple attracts Zoroastrian pilgrims from all parts of India and from around the world.

Credits:-

Text	: Based on the material available on internet
Stamps//First Day Cover/Brochure	: Sh. Sankha Samanta
Cancellation Cachet	: Smt. Nenu Gupta

भारतीय डाक
India Post

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

दादाभाई नवरोजी DADABHAI NAOROJI

विवरणिका BROCHURE

दादाभाई नवरोजी

दादाभाई नवरोजी को "ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया" के रूप में जाना जाता है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में, वे उन पथ प्रदर्शकों में से थे, जिनकी भारत के भविष्य के निर्माण में अहम् भूमिका रही थी। वर्ष 1892 से 1895 तक उन्हें ब्रिटेन की संसद (हाउस ऑफ कॉमन्स) में लिबरल पार्टी की ओर से संसद सदस्य बनने का सम्मान प्राप्त हुआ था। ब्रिटेन की संसद का सदस्य बनने वाले, वे एशिया के प्रथम व्यक्ति थे। नवरोजी को, ए ओ ह्यूम और दिनशॉ एदुलजी वाचा के साथ, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना करने का भी श्रेय प्राप्त है। उनकी कृति "पावर्टी एण्ड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया" में, ब्रिटिश राज के अंतर्गत भारत के आर्थिक शोषण का बेहतरीन चित्रण किया गया है।

दादाभाई नवरोजी का जन्म 4 सितम्बर, 1825 को मुंबई के एक पारसी परिवार में हुआ था और उनकी शिक्षा एल्फिनस्टोन इंस्टीट्यूट स्कूल में हुई। बड़ोदा के महाराजा, सायाजीराव गायकवाड़ ।।। ने उन्हें संरक्षण प्रदान किया और वर्ष 1874 में महाराजा के दीवान के रूप में उन्होंने अपना सार्वजनिक जीवन आरंभ किया। पादरी के रूप में, नवरोजी ने 1 अगस्त, 1851 को 'रहनुमाई मज्दायास्ने' सभा (मज्दायास्ने पंथ के मार्गदर्शी सिद्धांत) की स्थापना की ताकि पारसी धर्म की मौलिक शुचिता और सादगी पुनःस्थापित की जा सके। पारसी धर्म की संकल्पनाओं को स्पष्ट करने तथा पारसी समाज सुधारों का प्रसार करने के उद्देश्य से उन्होंने वर्ष 1854 में, गुजराती पाक्षिक पत्रिका, 'रास्त गोफ्तार' (अर्थात् सच बोलने वाला) की स्थापना की। वर्ष 1855 में उन्हें, बम्बई के एल्फिनस्टोन कॉलेज में गणित और प्राकृतिक दर्शन का प्रोफेसर नियुक्त किया गया। इस प्रकार का शैक्षणिक पदभार ग्रहण करने वाले वे प्रथम भारतीय थे। वर्ष 1855 में वे लंदन गए और कामा एंड कंपनी में भागीदार बने, जो ब्रिटेन के लिवरपूल में स्थापित की जाने वाली प्रथम भारतीय कंपनी थी, किन्तु नैतिकता के आधार पर, तीन वर्ष की अवधि में ही उन्होंने त्याग-पत्र दे दिया। वर्ष 1859 में उन्होंने, दादाभाई नवरोजी एंड कंपनी नाम से अपनी स्वयं की कॉटन ट्रेडिंग कंपनी की स्थापना की। बाद में यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन में वे गुजराती के प्रोफेसर बने।

वर्ष 1865 में, दादाभाई नवरोजी ने लंदन भारतीय सभा के शुभारंभ का मार्ग प्रशस्त किया, जिसका उद्देश्य भारतीय राजनीति, सामाजिक और साहित्यिक विषयों पर चर्चा करना था। वर्ष 1861 में नवरोजी ने, मुंचेरजी होरमसजी कामा के साथ मिलकर यूरोपीय पारसी धर्म न्यास निधि की स्थापना की। वर्ष 1867 में नवरोजी ने, ईस्ट इंडिया एसोसिएशन, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पूर्ववती संगठनों में से एक, की स्थापना में भी अपना सहयोग प्रदान किया। इस संगठन का उद्देश्य ब्रिटिश जनसामान्य के समक्ष भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करना था। इस संघ ने कुछ हठधर्मी गुटों द्वारा किए जा रहे विभाजनकारी प्रचार का विरोध करने का प्रयास किया। शीघ्र ही, इस संघ को प्रतिष्ठित अंग्रेजों का समर्थन प्राप्त हो गया और यह ब्रिटिश संसद में उल्लेखनीय प्रभाव डालने में सफल हुआ। वर्ष 1874 में वे, बड़ोदा के प्रधानमंत्री बने तथा मुबंई विधान परिषद के सदस्य (1885-89) रहे। बंबई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से कुछ वर्ष पूर्व वे सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी द्वारा स्थापित भारतीय राष्ट्रीय संघ के भी, कलकत्ता से सदस्य रहे। तदुपरांत, उन दोनों ही समूहों का 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' में विलय हो गया और नवरोजी को वर्ष 1886 में कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

नवरोजी पुनः ब्रिटेन गए और उन्होंने अपनी राजनीतिक सहभागिता जारी रखी। वर्ष 1892 के आम चुनाव में फिंसबरी सेंट्रल में लिबरल पार्टी से निर्वाचित हुए। ब्रिटिश संसद के, वे प्रथम भारतीय सदस्य थे। वर्ष 1901 में उन्होंने "पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया" नामक पुस्तक प्रकाशित की। वर्ष 1906 में, नवरोजी को पुनः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। नवरोजी कांग्रेस में, उस दौर में एक नरमपंथी थे जिस समय पार्टी की राय नरमदल और गर्मदल में बंटी हुई थी। नवरोजी, बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले और मोहनदास कर्मचंद गांधी के मार्गदर्शक थे। ग्यारह वर्ष की आयु में उनका विवाह गुलबाई के साथ हुआ था। 30 जून, 1917 को 91 वर्ष की आयु में, उनका देहान्त हुआ। वर्ष 2014 में, उप प्रधानमंत्री निक क्लैग ने ब्रिटेन-भारत संबंधों के लिए उत्कृष्ट सेवा के लिए दादाभाई नवरोजी पुरस्कार का शुभारंभ किया।

दादाभाई नवरोजी ने, ब्रिटिश उपनिवेशवाद के फलस्वरूप होने वाली आर्थिक क्षति एवं राष्ट्रीय संपदा के पलायन पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, उनकी गणना प्रतिष्ठित भारतीयों में से एक के रूप में की जाती थी। महात्मा गांधी ने वर्ष 1894 में एक पत्र में नवरोजी को लिखा कि "भारतीयों के लिए आप ऐसे हैं जैसे बच्चों के लिए पिता होते हैं।" सभी, वास्तव में, यह भावना रखते हैं।

डाक विभाग, दादाभाई नवरोजी, पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। इस डाक टिकट पर उदवाडा आतिश बेहराम अग्नि मंदिर और एल्फिनस्टोन कॉलेज के चित्र भी बने हुए है। उदवाडा का अग्नि मंदिर, देश में पारसी धर्म के आठ अग्नि मंदिरों (पूजा-स्थलों) में से एक है। यह, भारत का प्राचीनतम, 8वीं शताब्दी का अग्नि मंदिर है, जो प्राचीन पार्सिया के साथ हमारे ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध दर्शाता है। साथ ही यह दादाभाई नवरोजी द्वारा पारसी धर्म के विचारों एवं पारसी समाज में सुधारों के उनके प्रयासों का एक प्रतीक है। यह मंदिर समस्त भारत और विश्व के अनेक भागों से पारसी धर्म के तीर्थ यात्रियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

आभार:-

मूलपाठ	:	इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका	:	श्री शंख सामंत
विरूपण	:	श्रीमती नीनू गुप्ता

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	5.0 लाख
Stamps Printed	:	0.5 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00